RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सामाजिक परिणाम और चुनौतियां

डॉ. भूपेश, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री बलदेव राम मिर्धा, राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान)

16 नवंबर, 2024 के नवभारत टाइम्स में विज्ञान, तकनीकी विकास और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव को रेखांकित करती हुई एक खबर प्रकाशित हुई – "विधय रेड्डी एक कॉलेज के स्टूडेंट हैं। उन्होंने अपने कॉलेज के होमवर्क के लिए गूगल के नए AI चैटबोट जेमिनी का इस्तेमाल किया। अपने होमवर्क संबंधित सवाल पर जेमिनी ने जो जवाब दिया वो रेड्डी के लिए वाकई डराने वाला था। रेड्डी ने बताया कि जेमिनी ने जवाब देते हुए कहा कि यह तुम्हारे लिए है, सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे लिए है। तुम कोई विशेष इंसान नहीं हो और तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। जेमिनी ने आगे लिखा कि तुम समय और संसाधन दोनों की बर्बादी हो,तुम इस धरती के लिए बोझ हो। इसके बाद जो जवाब जेमिनी ने लिखा, वह 29 साल के छात्र के लिए भी चौंकाने वाला था। गूगल के AI चैटबोट ने आगे लिखा कि तुम नाली के समान हो, तुम ब्रह्मांड पर एक धब्बा हो और तुम मर जाओ।"[1] अपनी समझ को किनारे कर मशीनी समझ की नासमझ सलाह के अनुसार चलने वाला विद्यार्थी किस अंजाम तक पहुंच सकता था, इसका अंदाजा लगाने के लिए पाठकों को कोई विशेष समझ की जरूरत नहीं होगी।

की वर्ड : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, चैटजीपीटी, ओपन एआई, डीपसीक।

अब जरा नई दिल्ली से प्रकाशित 'अमर उजाला' की इस खबर पर भी गौर फरमाइए – "आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस (AI) का इस्तेमाल आज कई क्षेत्रों में हो रहा है। मोबाइल से लेकर टीवी तक में AI का सपोर्ट मिल रहा है। AI का इस्तेमाल तब खतरनाक हो जा रहा है जब यह इंसानों को रिप्लेस करने लग रहा है। एक रिपोर्ट में दावा किया जा रहा है कि अगले दो साल में कॉल सेंटर्स में इंसानों की जरूरत नहीं होगी। लोगों की जगह AI काम करेंगे। यह बात टीसीएस के प्रमुख के कृथिवासन ने कही है। फाइनेंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक के कृथिवासन ने एक इंटरव्यू में कहा है कि आईटी सेक्टर में सबसे ज्यादा नौकरी कॉल सेंटर्स में मिलती है लेकिन अगले दो साल में यह नजारा कुछ और होने वाला है। तमाम कॉल सेंटर्स में AI का इस्तेमाल बड़े स्तर पर होने लगेगा और इंसानों की जरूरत नहीं होगी।"[2]

ये दो उदहारण तो बानगी भर है। समाचार पत्रों में बहुधा प्रकाशित होने वाली और अद्यतन जीवन में अनुभूत की जाने वाली इस तरह के अनेकानेक समाचार और घटनाएं ए.आई. के रूप में समाज के समक्ष उपस्थित होने वाली चुनौतियों और परिणामों की तरफ संकेत करती हुई भविष्य की धुंधली लेकिन कुछ–कुछ डरावनी तस्वीर प्रस्तुत करती है। ये खबरें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की समझ और उपयोगिता पर एक बड़े सवालिया निशान का रूप लेती हुई पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करती है। क्या वाकई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी मानव मस्तिष्क का स्थान ले सकती है? क्या यह मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को कोई कल्याणकारी आयाम प्रदान कर सकती है? अथवा ए.आई. का बढ़ता दायरा मनुष्य के विवेक और चिंतन की धार को कुंद कर उसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी का गुलाम बनाकर ही थमेगा?

तस्वीर का दूसरा पहलू भी भविष्य में होने वाले परिवर्तन का सूचक है, लेकिन यहां आशंका के अंधियारे बादलों में आशा–आकांक्षा की स्वर्ण रश्मियां प्रस्फुटित होती हुई दिखाई पड़ती है – "दिग्गज अमेरिकी सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी कंपनी एनवीडिया (NVIDIA) और मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज भारत में एआई इंफ्रा बनाने के लिए हाथ मिला लिए हैं। मुंबई में आयोजित एनवीडिया एआई समिट 2024 में मुकेश अंबानी के साथ बातचीत करते हुए एनवीडिया के सीईओ जेनसेन हुआंग ने इस पार्टनरशिप का ऐलान किया। जेनसेन हुआंग ने गुरुवार को कहा कि विश्व के कंप्यूटर इंडस्ट्री के लिए सभी के पसंदीदा भारत में 2024 में कंप्यूटिंग क्षमता में 20 गुना बढ़ोतरी होगी और वो जल्द ही प्रभावशाली एआई सॉल्यूशन्स का निर्यात करेगा।... हुआंग ने कहा कि परंपरागत रूप से सॉफ्टवेयर एक्सपोर्ट का केंद्र रहा भारत, भविष्य में एआई एक्सपोर्ट में लीडर बनने के लिए तैयार है।... एआई से नौकरी जाने को लेकर उत्पन्न चिंताओं पर हुआंग ने जोर देकर कहा कि एआई नौकरियों को पूरी तरह से खत्म नहीं करेगा, लेकिन ये काम करने के तरीके में बुनियादी बदलाव लाएगा। उन्होंने कहा, ''एआई किसी भी प्रकार से नौकरी नहीं

छीनेगा, लेकिन जो व्यक्ति किसी काम को बेहतर ढंग से करने के लिए एआई का इस्तेमाल करेगा, वो नौकरी छीन लेगा।"[3]

आशा–निराशा के झुटपुटे से निकलकर हकीकत की रोशनी में तथ्य और सत्य की जांच पड़ताल से ही विषय का पूरा स्वरूप सामने आ पाएगा। 'अमर उजाला' में प्रकाशित इस खबर पर भी जरा नजर डालिए – "हाल ही में उत्तर प्रदेश पुलिस ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से प्रतियोगी परिक्षाओं में नकल करने वाले 87 संदिग्ध नकलचियों को दबोचा है। उत्तर प्रदेश पुलिस ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा संचालित फेस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर की मदद से इन नकलचियों को पकड़ने में सफलता पाई। भारत सरकार ने अपने विभिन्न सरकारी उपक्रमों में अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का उपयोग करना शुरू कर दिया है। यह आधुनिक तकनीक देश की राजव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को नए स्तर पर ले जाने का काम करने वाली है।"[4]

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से किसी अपराधी का पता लगाकर उसे गिरफ्तार करने का किस्सा भी जेम्स बॉन्ड सरीखी फिल्मों–सा काल्पनिक लेकिन रहस्य और रोमांच से भरा हुआ लगता है – "राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पुलिस ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का इस्तेमाल कर स्नैचर की पहचान की है और यह अपने आप में एक अलग तरह का मामला है। दरअसल, एक महिला का फोन छीनकर एक स्नैचर फरार हुआ और एक सीसीटीवी फुटेज में नजर भी आया. लेकिन, उसने मास्क लगा रखा था और इस वजह से उसकी पहचान नहीं हो पाई। इसके बाद एंट्री हुई एआई (AI) की, जिसकी मदद से पुलिस ने फुटेज से स्नैचर के चेहरे से मास्क हटाया और उसकी पहचान कर ली।"[5] आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के गॉड फादर कहे जाने वाले जेफ्री हिंटन का भी मानना है कि "एआई के साथ प्रोडक्टिविटी और पैसा बढ़ेगा, लेकिन यह पैसा अमीर लोगों के पास जाएगा। इसके साथ ही एआई की वजह से लोगों की नौकरियां खत्म हो जाएंगी और यह समाज के लिए बहुत बुरा साबित होगा।"[6]

समाचार पत्रों में प्रकाशित उपर्युक्त सभी खबरें मानव जीवन में कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते प्रभाव की परिचायक हैं। इन उदाहरणों से एआई के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। किसी भी औजार, मशीन या तकनीक का उपयोग उसे काम लेने वाले की भावना और उद्देश्य के अनुसार प्रतिफलित होता है। परमाणु ऊर्जा का उपयोग दुनिया के विकास और मानवता की राह में मील का पत्थर साबित हो सकता है, वहीं परमाणु बम के रूप में इसके महाविनाशकारी प्रभाव का प्रत्यक्षदर्शी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान सहित पूरा विश्व बन चुका है। आज भी परमाणु अस्त्रों से संपन्न विश्व की महाशक्तियों को सुनिश्चित करना है कि भविष्य में हिरोशिमा और नागासाकी का विनाशकारी मंजर फिर कभी नहीं दुहराया जाए।

कंप्यूटर, इंटरनेट और सॉफ्टवेयर की तरह एआई का निर्माता भी मनुष्य है। चैट जीपीटी, ओपन एआई और डीपसीक के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव की सहायक तो बन सकती है, लेकिन कभी भी मानवीय समझ, विवेक और भावनाओं का स्थान नहीं ले सकती। आज के बदलते हुए परिवेश में हमें तय करना होगा कि आर्थिक और तकनीकी विकास के साथ–साथ हमारा जुड़ाव घर, परिवार और समाज से भी बना रहे। मनुष्य को किसी भी वस्तु, मशीन या तकनीक से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। इंसानियत को बचाने के लिए इंसान की अहमियत हमेशा बनी रहेगी। तकनीक और मशीन जीवन का एक पहलू मात्र ही हो सकती है, लेकिन जीवन की संपूर्णता के लिए मानव का होना जरूरी है। एक संवेदनशील, प्रज्ञावान मानव का... जो तकनीक का स्वामी बनकर मानवता के उत्थान का पथ प्रदर्शित करें, न कि उसका गुलाम बनकर अपने हाथों से अपनी ही कब्र खोदने को तत्पर रहे।

संदर्भ :

1. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/google-ai-chatbot-gemini-said-29-year-college-student-to-die-as-he-is-burden-to-earth/articleshow/115352233.cms (नवभारतटाइम्स.कॉम Curated by उत्कर्ष गहरवार | 16 Nov 2024)
2. https://www.amarujala.com/technology/tech-diary/ai-will-replace-people-by-2025-says-tcs-chief-this-is-the-end-of-call-center-jobs-2024-04-26 (टेक डेस्क, अमर उजाला, नई दिल्ली Published by: प्रदीप पाण्डेय Updated Fri, 26 Apr 2024)

3. https://www.indiatv.in/paisa/business/nvidia-will-build-ai-infrastructure-in-india-in-collaboration-with-reliance-ceo-said-ai-will-not-take-away-jobs-2024-10-24-1085669 (indiatv.in Edited By: Sunil Chaurasia Published : Oct 24, 2024)
4. https://www.amarujala.com/photo-gallery/utility/what-are-the-10-big-benefits-of-artificial-intelligence-utility-news-in-hindi-2023-06-29 (यूटिलिटी डेस्क, अमर उजाला, नई दिल्ली Published by: संकल्प सिंह Updated Thu, 29 Jun 2023)
5. https://zeenews.india.com/hindi/crime/delhi-police-use-artificial-intelligence-to-identify-masked-snatcher-arrested-accued-in-recover-stolen-phone/2532773 (zeenews.india.com, Sumit Rai.Updated: Nov 27, 2024)
6. https://www.jagran.com/technology/tech-news-geoffrey-hinton-the-godfather-of-ai-warns-about-job-loss-due-to-ai-23721328.html (jagran.com, Edited By: Shivani Kotnala, Updated: Mon, 20 May 2024)

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...